

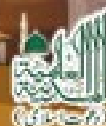
Faizane Sayyid Ahmed Kabeer Rafaai (Hindi)

फ़ैज़ाने सय्यिद अह़मद कबीर रफ़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی









اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा। ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(مستطرف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।



त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक-त-बतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

मजलिसे तराजिम हिन्द (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला दा'वते इस्लामी की मजलिस "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक-त-बतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़-लत़ी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

म-दनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें राबित़ा न फ़रमाएं।

...राबित़ा :- मजलिसे तराजिम

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

☎ 9327776311 E-mail : tarajim.hind@dawateislami.net

हुरूफ़ की पहचान

फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	त = ت
ह़ = ح	छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج
ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ
ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ
ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س	ज़ = ژ
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط
घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ह = ھ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
ई = اِی	इ = اِ	ऐ = اَے	ए = ے	य = ی

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

फ़ैज़ाने सय्यिद अहमद कबीर रफ़ाई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : "बेशक तुम्हारे नाम मअ् शनाख़्त मुझ पर पेश किये जाते हैं लिहाज़ा मुझ पर अह़सन (या'नी ख़ूबसूरत अल्फ़ाज़ में) दुरूदे पाक पढ़ो।"(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के करोड़हा करोड़ एह़सान कि जिस ने आस्माने विलायत को रोशन सितारों से मुज़य्यन फ़रमा कर इन की किरनों से सारे आ़लम को मुनव्वर फ़रमाया नीज़ क़ुर्बे इलाही की मनाज़िल तै करने और इन के फ़ुयूज़ो ब-रकात से मुस्तफ़ीज़ होने के लिये इन की ता'लीमात से मख़्लूक़ को राहे हिदायत पर चलना सिखाया। ह़ज़रत मुह़्युद्दीन सय्यिद अबुल अ़ब्बास अह़मद कबीर रफ़ाई हुसैनी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی भी इन्हीं दरख़्शां सितारों में से एक चमकता सितारा हैं। आइये ! हुसूले ब-र-कत के लिये इन का ज़िक्रे ख़ैर सुनिये और अपनी अ़क़ीदतों को चार चांद लगाइये।

1...مصنف عبد الرزاق، کتاب الصلاۃ، باب الصلاۃ علی النبی، ۲/۱۴۰، حدیث: ۳۱۱۶

नाम व नसब

आप का नाम अह़मद बिन अ़ली बिन यह़्या बिन ह़ाज़िम बिन अ़ली बिन रफ़ाआ़ है। जद्दे अमजद रफ़ाआ़ की मुना-सबत से रफ़ाई कहलाए। आप सय्यिदुश्शु-हदा इमाम हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की औलाद में से हैं, आप की कुन्यत अबुल अ़ब्बास और लक़ब मुह़्युद्दीन है जब कि मस्लक के ए'तिबार से शाफ़ेई हैं।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन यह़्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का निकाह़ ह़ज़रत सय्यिद मन्सूर बत़ाइह़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की हमशीरा से हुवा था जो कि निहायत परहेज़ गार ख़ातून थीं इन्ही के बत़्न से 15 र-जबुल मुरज्जब 512 सि.हि. ब मुत़ाबिक़ यकुम नवम्बर 1118 सि.ई. में ह़ज़रत सय्यिद अह़मद कबीर रफ़ाई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की विलादत हुई।[2]

पैदाइश से पहले विलायत की बिशारत

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद कबीर रफ़ाई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की विलादत से पहले ही आप की विलायत की बिशारतें दी जाने लगी थीं। चुनान्चे ताजुल आ़रिफ़ीन, ह़ज़रत अबुल वफ़ा मुह़म्मद बिन मुह़म्मद काकीस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का गुज़र उम्मे अ़बीदा गाउं के क़रीब से हुवा तो कहा : اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ या अह़मद ! मुरीदों ने अ़र्ज़ की : हम ने तो किसी अह़मद को नहीं देखा, इर्शाद फ़रमाया : वोह इस वक़्त अपनी वालिदा के पेट में हैं मेरी वफ़ात के बा'द पैदा होंगे, उन

1...... सीरते सुल्त़ानुल औलिया, स. 22 मुल-त-क़त़न, वग़ैरा, अज़्ज़ावियतुर्रफ़ाइय्या, बाबुल मदीना कराची

2...... सीरते सुल्त़ानुल औलिया, स. 24 मुल-त-क़त़न, वग़ैरा

का नाम अह्मद रफ़ाई है और रूए ज़मीन का हर इबादत गुज़ार उन के सामने आ़जिज़ी से पेश आएगा ।(1)

आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की पैदाइश से चालीस दिन पहले आप के मामूं ह़ज़रत सय्यिद मन्सूर बत़ाइह़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللّٰهِ الْقَوِی ख़्वाब में प्यारे आक़ा मुह़म्मदे मस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीदार से मुशर्रफ़ हुए, देखा कि मक्की म-दनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमा रहे हैं : ऐ मन्सूर ! चालीस दिन बा'द तेरी बहन के बत़्न से एक लड़का पैदा होगा उस का नाम अह्मद रखना और जब वोह कुछ समझदार हो जाए तो उसे ता'लीम के लिये शैख़ अबुल फ़ज़्ल अ़ली क़ारी वासित़ी के पास भेज देना और उस की तरबियत से हरगिज़ ग़फ़्लत न बरत्ना । इस ख़्वाब के पूरे चालीस दिन बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अह्मद कबीर रफ़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُاللّٰهِ الْقَوِی इस दुन्या में जल्वा अफ़रोज़ हो गए ।(2)

सात दरवेशों की सात बिशारतें

बचपन में आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के क़रीब से सात दरवेशों का गुज़र हुवा तो वोह ठहर कर आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को देखने लगे । उन में से एक ने कलिमए त़य्यिबा لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه पढ़ा और कहने लगा : इस बा ब-र-कत दरख़्त का ज़ुहूर हो चुका है, दूसरे ने कहा : इस दरख़्त से कई शाख़ें निकलेंगी, तीसरे ने कहा : कुछ अ़र्से में इस दरख़्त का साया त़वील हो जाएगा, चौथे ने कहा : कुछ अ़र्से

1 . . . طبقات الصوفية للمناوی، ۱۹۱/۴، دار صادر بیروت

2...... सीरते सुल्त़ानुल औलिया, स. 44 मुलख़्ख़सन

में इस का फल ज़ियादा होगा और चांद चमक उठेगा, पांचवें ने कहा : कुछ अ़र्से बा'द लोग इन से करामात का ज़ुहूर देखेंगे और कसरत से इन की जानिब माइल होंगे, छठे ने कहा : कुछ ही अ़र्से बा'द इन की शानो अ़ज़मत बुलन्द हो जाएगी और निशानियां ज़ाहिर हो जाएंगी, सातवें ने कहा : न जाने (बुराई के) कितने दरवाज़े इन की वज्ह से बन्द हो जाएंगे और बहुत से लोग इन के मुरीद होंगे ?(1)

उ़लूमे ज़ाहिरी व बातिनी की तक्मील

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने सात साल की उ़म्र में कुरआने मजीद हिफ़्ज़ किया, इसी साल आप के वालिदे माजिद किसी काम के सिल्सिले में बग़दाद तशरीफ़ ले गए और वहीं उन का इन्तिक़ाल हो गया। वालिद के इन्तिक़ाल के बा'द आप के मामूंजान शैख़ मन्सूर عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفُوْر ने आप और आप की वालिदा को अपने पास बुला लिया ताकि अपनी सर-परस्ती में आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ज़ाहिरी व बातिनी ता'लीमो तरबियत का सिल्सिला जारी रख सकें, कुरआने पाक तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه पहले ही हिफ़्ज़ कर चुके थे लिहाज़ा कुछ दिनों बा'द ह़ज़रत शैख़ मन्सूर عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفُوْر ने हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हिदायत के मुताबिक़ वासित़ में ह़ज़रत शैख़ अ़ली क़ारी वासित़ी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی की ख़िदमत में इ़ल्म ह़ासिल करने के लिये आप को भेज दिया, शैख़ अ़ली क़ारी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی ने आप की ता'लीमो तरबियत पर ख़ुसूसी तवज्जोह दी। उस्ताद साहि़ब की भरपूर शफ़्क़त और अपनी ख़ुदादाद

---

1 . . . جامع کرامات الاولیاء، ۱/ ۴۹۰، مرکز اہل سنت برکات رضا ہند

सलाहिय्यत के नतीजे में सय्यिद अह़मद कबीर रफ़ाई عَلَيۡهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِى ने सिर्फ़ बीस साल की उ़म्र में ही तफ़्सीर, ह़दीस, फ़िक़्ह, मआ़नी, मन्तिक़ व फ़ल्सफ़ा और तमाम मुरव्वजा उ़लूमे ज़ाहिरी की तक्मील कर ली और साथ ही अपने मामूंजान शैख़ मन्सूर बत़ाइह़ी عَلَيۡهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِى से उ़लूमे बात़िनी भी ह़ासिल करने लगे लुत़्फ़े ख़ुदावन्दी और मुना-स-बते त़ब्ई की वज्ह से आप ने बात़िनी उ़लूम में भी बहुत जल्द कमाल ह़ासिल कर लिया।[1]

असातिज़ए किराम

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद कबीर रफ़ाई عَلَيۡهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِى ने अपने वक़्त के नामवर और जलीलुल क़द्र असातिज़ा से इक्तिसाबे इ़ल्म किया। आप के मामूंजान शैख़ुल इस्लाम ह़ज़रत सय्यिद मन्सूर عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡغَفُوۡر और क़ाज़ी अबुल फ़ज़्ल अ़ली वासित़ी अल मा'रूफ़ इब्नुल क़ारी तो आप के असातिज़ा में सरे फ़ेहरिस्त हैं क्यूं कि मामूंजान की निगरानी ही में आप की ता'लीमो तरबियत पायए तक्मील को पहुंची और दीगर तमाम असातिज़ा के मुक़ाबले में सब से ज़ियादा उ़लूमो फ़ुनून क़ाज़ी अबुल फ़ज़्ल رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه ही से ह़ासिल किये अलबत्ता इन दोनों ह़ज़रात के इ़लावा शैख़ अबुल फ़त्ह़ मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल बाक़ी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡكَافِى, शैख़ मुह़म्मद बिन अ़ब्दुस्समीअ़ अ़ब्बासी हाशिमी عَلَيۡهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِى और शैख़ आ़रिफ़ बिल्लाह सय्यिद अ़ब्दुल मलिक बिन हुसैन ह़रबूनी वासित़ी عَلَيۡهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِى भी आप के असातिज़ा में शामिल हैं।[2]

1...... सीरते सुल्त़ानुल औलिया, स. 45 ता 46 मुलख़्ख़सन, वग़ैरा
2...... सीरते सुल्त़ानुल औलिया, स. 47 बि तग़य्युरिन

मख़्लूक़े ख़ुदा में शोहरत

पहले पहल तो सिर्फ़ उ़लूमे ज़ाहिरी में आप की ख़ुदादाद क़ाबिलिय्यत और ज़हानत की वज्ह से आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का शोहरा हुवा जिस के नतीजे में बड़े बड़े उ़-लमा व फ़ु-ज़ला आप के दर्स में इस्तिफ़ादा के लिये ह़ाज़िर होने लगे और फिर जब आप ने निसाबे त़रीक़त और सुलूके मा'रिफ़त के मदारिजे आ़लिया को भी त़ै कर लिया और आप के तक़्वा व परहेज़ गारी का हर ख़ासो आ़म को इ़ल्म हो गया तो दूर दूर से लोग आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के दरियाए इ़ल्मो मा'रिफ़त से अपने तिश्नगी मिटाने आने लगे लिहाज़ा आप के मामूं सय्यिद मन्सूर رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ख़ानक़ाहे उम्मे अ़बीदा (सूबा ज़ीक़ार, जुनूबी इ़राक़) की ख़िलाफ़त आप के सिपुर्द फ़रमा दी ताकि वहां रह कर आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ख़ल्क़े ख़ुदा की हिदायत व रहनुमाई करें और अपने इ़ल्मे ज़ाहिरी के साथ साथ इ़ल्मे बात़िनी से भी लोगों को फ़ैज़ पहुंचाएं।

सज्जादा नशीनी का वाक़िआ़

जब ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ मन्सूर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفُوْر की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो इन की ज़ौजए मोह़-त-रमा ने अ़र्ज़ की : अपने फ़रज़न्द के लिये ख़िलाफ़त की वसिय्यत कर दें, शैख़ मन्सूर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفُوْر ने फ़रमाया : नहीं बल्कि मेरे भान्जे अह़मद के लिये ख़िलाफ़त की वसिय्यत है, ज़ौजए मोह़-त-रमा ने जब इसरार किया तो आप ने अपने बेटे और भान्जे इमाम रफ़ाई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی को बुलवाया और दोनों से फ़रमाया : मेरे पास खजूर के पत्ते लाओ,

बेटा तो बहुत से पत्ते काट कर ले आया मगर सय्यिदुना इमाम रफ़ाई कोई पत्ता न लाए, वज्ह पूछी तो ह़िक्मत से भरपूर जवाब देते हुए अ़र्ज़ की : मैं ने सब को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ करते हुए पाया, इसी लिये किसी पत्ते को नहीं काटा, जवाब सुन कर शैख़ मन्सूर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفُوْر ने अपनी ज़ौजए मोह़-त-रमा की त़रफ़ मुस्कुरा कर देखा और फ़रमाया : मैं ने भी कई मर्तबा येही दुआ़ की थी कि मेरा ख़लीफ़ा मेरा बेटा हो मगर मुझ से हर मर्तबा येही फ़रमाया गया कि तुम्हारा ख़लीफ़ा तुम्हारा भान्जा है। लिहाज़ा 28 साल की उ़म्र में सय्यिद अह़मद कबीर रफ़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی को मामूंजान की त़रफ़ से ख़िलाफ़त अ़त़ा हुई और उसी साल शैख़ मन्सूर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفُوْر का इन्तिक़ाल हो गया।(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि किसी को कोई मन्सब देने से पहले इस बात को पेशे नज़र रखना बहुत ज़रूरी है कि वोह इस का अह्ल है भी कि नहीं ? चुनान्चे इस ज़िम्न में 20, 21, ज़ुल क़ा'दतिल ह़राम 1433 सि.हि. को होने वाले दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के म-दनी मश्वरे से चन्द म-दनी फूल पेशे ख़िदमत हैं : अमानत देने का मत़लब किसी शख़्स पर किसी मुआ़-मले में "भरोसा" करना है। जब कोई शख़्स किसी को कोई ज़िम्मेदारी इस भरोसे पर सिपुर्द करे कि येह शख़्स उसे सह़ीह़ त़ौर पर बजा लाएगा और इस में कोताही नहीं करेगा तो येह अमानत की एक सूरत है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अमानत इन के "अह्ल" को सिपुर्द करने का ताकीदी हुक्म फ़रमाया है। चुनान्चे

1 ...بہجة الاسرار، ذکر احترام المشائخ والعلماء له...الخ، ص ۲۷۰، دار الکتب العلمیه

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

اِنَّ اللّٰهَ یَاْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰۤى اَهْلِهَاۙ
(پ۵، النساء:۵۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें जिन की हैं उन्हें सिपुर्द करो।

ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते करीमा के तह़त फ़रमाते हैं : (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने) अस्ह़ाबे अमानात और हुक्काम को अमानतें दियानत दारी के साथ "ह़क़दार" को अदा करने और फ़ैसलों में इन्साफ़ करने का हुक्म दिया, बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि फ़राइज़ भी **अल्लाह** तआ़ला की अमानतें हैं, उन की अदा भी इस हुक्म में दाख़िल है।

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : अहले अमानत वोह हैं जो इस अमानत के ह़क़दार हों। मज़ीद फ़रमाते हैं : ऐ सारे मुसल्मानो ! **अल्लाह** तआ़ला तुम को ताकीदी हुक्म देता है कि तुम हर क़िस्म की माली, जानी, रूह़ानी, ईक़ानी (ईमानी), राज़दारी, ईमानदारी की अमानतें उन के मुस्तह़िक़ों या मालिकों या अहलों या उन के लाइक़ हस्तियों को अदा कर दो।(1)

1. किसी शो'बे का ज़िम्मेदार उसी को बनाया जाए, जिस का उस शो'बे की त़रफ़ मैलान हो और वोह उस शो'बे में म-दनी काम करने का जज़्बा भी रखता हो।

1...... तफ़्सीरे नईमी, पारह : 5, अन्निसाअ, तह़्तल आयह : 58, 5/158, मक्तबए इस्लामिय्या, मर्कज़ुल औलिया लाहोर

2. अह्ल का तक़र्रुर करें अगर्चे अहलिय्यत की सत्ह़ मुख़्तलिफ़ हो म-सलन 80 फ़ीसद, 60 फ़ीसद और 50 फ़ीसद वग़ैरा जिस अह्ल में अहलिय्यत की सत्ह़ कमज़ोर हो म-दनी तरबियत के ज़रीए़ मज़्बूत़ करें।
3. अहलिय्यत के साथ साथ वक़्त देने वाला और फ़ुअ़्आ़ल होना भी ज़रूरी है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रियाज़त व मुजा-हदा

ह़ज़रत सय्यिद अह़मद कबीर रफ़ाई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के तक़्वा, परहेज़ गारी और क़नाअ़त का आ़लम येह था कि कभी अपने पास दो क़मीसें न रखते, जब क़मीस धोनी होती तो दरिया में उतर कर उस का मैल कुचैल दूर करते और धूप में खड़े हो कर उसे ख़ुश्क कर लेते, दो तीन दिन बा'द ही कोई एकआध लुक़्मा खाते अलबत्ता अगर कोई मेहमान आ जाता तो मुरीदों के घर से उस के खाने का बन्दो बस्त कर देते।(1)

नवाफ़िल की कसरत

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ रोज़ाना चार सो रक्अ़ात नवाफ़िल पढ़ा करते जिन में एक हज़ार मर्तबा सू-रतुल इख़्लास पढ़ते नीज़ रोज़ाना दो हज़ार मर्तबा इस्तिग़्फ़ार भी करते।(2)

1 ... سیر اعلام النبلاء، ١٥/ ٣١٩ بتغیر، دار الفکر بیروت
2 ... طبقات الصوفیۃ للمناوی، ٢/ ٢٢٥

ऐ काश ! हम भी फ़राइज़ो वाजिबात के साथ साथ नफ़्ली इबादात, तिलावते कुरआन, कसरत से इस्तिग़फ़ार और दुरूदे पाक पढ़ने के आ़दी बन जाएं।

एक साल तक नसीह़त की तकरार

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि एक दफ़्आ़ में आ़रिफ़ बिल्लाह शैख़ अ़ब्दुल मलिक अल ख़रनौती عَلَیْہِ رَحمَۃُاللّٰہِ الْقَوِی के पास से गुज़रा तो आप ने मुझ से फ़रमाया : ऐ अह़मद ! मैं तुझ से जो कहता हूं उसे याद रखना, मैं ने अ़र्ज़ की : जी हां, फ़रमाया : ग़ैर की जानिब मु-तवज्जेह रहने वाला ह़क़ को नहीं पा सकता और फिसल जाने वाला कभी काम्याब नहीं हो सकता, जिस ने अपने नफ़्स के नुक़्सान को न जाना उस के तमाम अवक़ात नाक़िस हैं। फिर मैं वहां से रुख़्सत हुवा और एक साल तक इस की तकरार करता रहा, फिर दोबारा आप की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : मुझे वसिय्यत फ़रमाएं तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : अ़क़्ल मन्दों में जहालत, त़बीबों में बीमारी और दोस्तों में बे वफ़ाई बहुत बुरी बात है। मैं एक साल तक इस की भी तकरार करता रहा और आप की नसीह़तों से मुझे बहुत फ़ाएदा हुवा।(1)

मख़्लूक़े ख़ुदा पर शफ़्क़त

जब आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के जिस्म पर मच्छर बैठ जाता तो उसे न ही ख़ुद उड़ाते और न किसी को उड़ाने देते बल्कि फ़रमाते :

1 ... طبقاتِ کبریٰ للشعرانی، ص۱۹۷، دارالفکر بیروت

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जो ख़ून इस के ह़िस्से में लिख दिया है वोही पी रहा है और जब आप धूप में चल रहे होते और कोई टिड्डी आप के कपड़ों में सायादार जगह पर बैठ जाती तो जब तक उड़ न जाती आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه उसी जगह ठहरे रहते और फ़रमाते : इस ने हम से साया ह़ासिल किया है। इसी त़रह़ जब आस्तीन पर बिल्ली सो जाती और नमाज़ का वक़्त हो जाता तो आस्तीन को काट देते मगर बिल्ली को न जगाते और नमाज़ से फ़राग़त के बा'द आस्तीन दोबारा सी लेते।(1)

ख़ारिश ज़दा कुत्ते की ख़बर गीरी

एक मर्तबा आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने एक ख़ारिश ज़दा कुत्ते को देखा जिसे बस्ती वालों ने बाहर निकाल दिया था, आप उसे जंगल में ले गए और उस पर साएबान बनाया नीज़ उसे खिलाते पिलाते और हर त़रह़ से उस का ख़याल रखते रहे ह़त्ता कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की भरपूर तवज्जोह के नतीजे में जब वोह तन्दुरुस्त हो गया तो आप ने उसे गर्म पानी से नहला कर उज्ला कर दिया।(2)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई बुज़ुर्गाने दीन رحمھُم اللہُ الْمُبِین का त़र्ज़े अ़मल हमारे लिये क़ाबिले तक़्लीद है लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि इन्सान तो इन्सान जानवरों से भी बद सुलूकी न करें और इन के साथ ह़ुस्ने सुलूक से पेश आएं क्या ख़बर हमारा येही अ़मल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में क़बूल हो जाए और हमारी दुन्या व आख़िरत संवर जाए।

---

1 ...طبقاتِ کبریٰ للشعرانی، ص۲۰۰

2 ...طبقاتِ کبریٰ للشعرانی، ص۲۰۰ملخصاً

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : एक फ़ाहिशा औ़रत की सिर्फ़ इस लिये मग़्फ़िरत फ़रमा दी गई कि उस का गुज़र एक कुत्ते के पास से हुवा जो कूंएं की मुंडेर के पास प्यास के मारे हांप रहा था, क़रीब था कि शिद्दते प्यास से मर जाता। उस औ़रत ने अपना मोज़ा उतार कर दोपट्टे से बांधा और पानी निकाल कर उसे पिलाया तो येही अ़मल उस की बख़्शिश का सबब हो गया।(1)

कोढ़ियों और अपाहजों की ख़िदमत

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद कबीर रफ़ाई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی का येह भी मा'मूल था कि मरीज़ों और अपाहजों के पास जाते और उन से हमदर्दी भरा सुलूक करते उन के कपड़े धोते, उन के सर और दाढ़ियों से मैल साफ़ करते, उन के पास खाना ले जाते और उन के साथ मिल कर खाते और बतौ़रे आ़जिज़ी उन से दुआ़एं करवाते, एक दिन आप का गुज़र चन्द बच्चों के पास से हुवा जो खेल रहे थे, आप رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को देखा तो हैबत की वज्ह से भाग गए आप उन के पीछे गए और फ़रमाया : मेरी वज्ह से तुम हैबत में मुब्तला हुए लिहाज़ा मुझे मुआ़फ़ कर दो और अपना खेल जारी रखो।(2)

तुम ने मुझे आदाब सिखाए हैं

एक मर्तबा आप رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का गुज़र ऐसी जगह से हुवा कि जहां बच्चे आपस में झगड़ रहे थे, आप رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उन्हें

1 ...بخاری، کتاب بدء الخلق، باب اذا وقع الذباب فی شراب... الخ، ۲/۴۰۹، حدیث:۳۳۲۱

2 ...طبقاتِ کبریٰ للشعرانی، ص۲۰۰ مفہوماً

एक दूसरे से अलग कर दिया फिर एक बच्चे से पूछा : तुम किस के बेटे हो ? बच्चे ने कहा : इस का कोई मक़्सद नहीं फिर आप क्यूं पूछ रहे हैं ? आप ने येह अल्फ़ाज़ बार बार दोहराए और फ़रमाया : ऐ बच्चे ! तुम ने मुझे आदाब सिखा दिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें जज़ाए ख़ैर अ़ता फ़रमाए ।(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस वाक़िए से मा'लूम हुवा कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن ज़बान के मुआ-मले में किस क़दर ह़स्सास हुवा करते थे कि अगर कोई कम उ़म्र भी इस बारे में इन की तवज्जोह दिलाता तो उसे डांटने धम्काने के बजाए दुआ़ओं से नवाज़ते । आइये हम भी शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मुस्तक़िल क़ुफ़्ले मदीना तह़रीक में शामिल हो कर ज़बान की ह़िफ़ाज़त की तरकीब बनाएं ।

मेरे अख़्लाक़ अच्छे हों मेरे सब काम अच्छे हों
बना दो मुझ को तुम पाबन्दे सुन्नत या रसूलल्लाह !

(वसाइले बख़्शिश, स. 186)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बीमारों की इयादत

जब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه गाउं के किसी शख़्स की बीमारी का सुनते तो उस के पास जा कर उस की इयादत करते अगर्चे रास्ता

1 ... طبقاتِ کبریٰ للشعرانی، ص ۲۰۰

कितना ही दूर क्यूं न होता और (कभी कभार) जाने आने में एक दो दिन लग जाते, कभी यूं भी होता कि आप रास्तों पर खड़े हो कर नाबीनाओं का इन्तिज़ार करते अगर कोई मिल जाता तो हाथ पकड़ कर उन्हें मन्ज़िल तक पहुंचा दिया करते।[1]

उ़म्र रसीदा लोगों पर शफ़्क़त

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه जब किसी उ़म्र रसीदा शख़्स को देखते तो उस के महल्ले वालों के पास जाते और उन्हें समझाते हुए येह ह़दीसे पाक सुनाते कि हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो बूढ़े मुसल्मान की इ़ज़्ज़त करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के बुढ़ापे के वक़्त किसी और को उस की इ़ज़्ज़त करने पर मुक़र्रर फ़रमा देता है।[2][3]

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ बयान करते हुए फ़रमाते हैं : जो शख़्स बूढ़े मुसल्मान का सिर्फ़ इस लिये एह़तिराम करे कि इस की उ़म्र ज़ियादा है, इस की इ़बादात मुझ से ज़ियादा हैं, येह मुझ से पुराने इस्लाम वाला है तो اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ दुन्या में वोह देख लेगा कि उस के बुढ़ापे के वक़्त लोग उस का एह़तिराम करेंगे। इस वा'दे में फ़रमाया गया कि ऐसा आदमी दराज़ उ़म्र भी पाएगा दुन्या

1 ... طبقاتِ کبریٰ للشعرانی، ص۲۰۰ بتغیر
2 ... ترمذی، کتاب البر والصلہ، باب ماجاء فی اجلال الکبیر، ۳/۴۱۱، حدیث:۲۰۲۹
3 ... طبقاتِ کبریٰ للشعرانی، ص۲۰۰

में माल, ऐ़श, इ़ज़्ज़त भी उसे मिलेगी आख़िरत का अज्र इस के इ़लावा है।[1]

मिस्कीनों और बेवाओं की दाद-रसी

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه सफ़र से वापसी पर जब अपनी बस्ती के क़रीब पहुंचते तो सामान बांधने वाली रस्सी निकाल लेते और लकड़ियां जम्अ़ कर के अपने सर पर रख लेते आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की देखा देखी दीगर फ़ु-क़रा भी ऐसा ही करते और शह्र में दाख़िल हो कर बेवाओं, मिस्कीनों अपाहजों, बीमारों, नाबीनाओं और बूढ़ों में वोह तमाम लकड़ियां तक़्सीम कर देते, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه कभी भी बुराई का बदला बुराई से न देते।[2]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने हमारे अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का त़र्ज़े ज़िन्दगी किस क़दर ख़ूब था कि कहीं जानवरों के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आते तो कहीं बीमारों की तीमार दारी किया करते, कहीं मोह्‌ताजों और परेशान ह़ालों की दस्त गीरी फ़रमाते तो कहीं नाबीनाओं और उ़म्र रसीदा लोगों की ख़ैर ख़्वाही और दिलजोई फ़रमाया करते ग़रज़ येह ह़ज़रात मीठे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमाने ज़ीशान خَيْرُ النَّاسِ اَنْفَعُهُمْ لِلنَّاسِ या'नी बेहतरीन शख़्स वोह है जो लोगों को फ़ाएदा

1...... मिरआतुल मनाजीह़, 6/560, ज़ियाउल क़ुरआन

2... طبقاتِ کبریٰ للشعرانی، ص ۲۰۰

पहुंचाए ।[1] की अ़-मली तस्वीर हुवा करते थे, लिहाज़ा हमें भी अपने मुसल्मान भाइयों के साथ ख़ैर ख़्वाही व दिलजोई से पेश आना चाहिये ।

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ख़ैर ख़्वाही और दिलजोई के मु-तअ़ल्लिक़ इर्शाद फ़रमाते हैं : मुसल्मानों की दिलजोई की अहम्मिय्यत बहुत ज़ियादा है । चुनान्चे ह़दीसे पाक में है : फ़राइज़ के बा'द सब आ'माल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ज़ियादा प्यारा मुसल्मान का दिल ख़ुश करना है ।[2] वाक़ेई अगर इस गए गुज़रे दौर में हम सब एक दूसरे की ग़म ख़्वारी व ग़म गुसारी में लग जाएं तो आनन फ़ानन दुन्या का नक़्शा ही बदल कर रह जाए । लेकिन आह ! अब तो भाई भाई के साथ टकरा रहा है, आज मुसल्मान की इ़ज़्ज़तो आबरू और उस के जानो माल मुसल्मान ही के हाथों पामाल होते नज़र आ रहे हैं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें नफ़रतें मिटाने और मह़ब्बतें बढ़ाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए ।[3]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1...جامع صغير، ص٢٣٦، حديث:٢٠٢٣

2...معجم كبير، ١١/٥٩، حديث:١١٠٧٩

3...... फ़ैज़ाने सुन्नत, 1/1244, मक-त-बतुल मदीना

मुझे मेरा ऐब बताओ

एक दिन ह़ज़रत सय्यिद अह़मद कबीर रफ़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ने बतौ़रे आ़जिज़ी अपने मुरीदों से फ़रमाया : तुम लोगों ने मेरे अन्दर कोई ऐ़ब देखा हो तो मुझे बता दो, एक मुरीद ने खड़े हो कर अ़र्ज़ की : या सय्यिदी ! आप में एक बहुत बड़ा ऐ़ब है, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने पूछा : ऐ मेरे भाई ! कौन सा ऐ़ब ? उस ने (भी आ़जिज़ी पर मब्नी जवाब देते हुए) अ़र्ज़ की : हमारे जैसे (बुरे लोगों) को अपनी सोह़बत से नवाज़े रखना । येह सुन कर सब मुरीद रोने लगे साथ ही साथ आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की आंखें भी अश्कबार हो गईं और फ़रमाने लगे : मैं तुम्हारा ख़ादिम हूं, मैं तुम सब लोगों से कमतर हूं ।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने इमाम अह़मद कबीर रफ़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى विलायत के अ़ज़ीम मर्तबे पर फ़ाइज़ होने के बा वुजूद किस क़दर आ़जिज़ी व इन्किसारी फ़रमाते । यक़ीनन आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की सीरते मुबा-रका में हमारे लिये बे शुमार म-दनी फूल हैं । मगर येह भी याद रखिये कि आ़जिज़ी सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ाति़र होनी चाहिये क्यूं कि येही आ़जिज़ी अ़ज़ीम सवाब और तरक़्क़िये द-रजात का बाइ़स बन सकती है अगर कोई शख़्स रियाकारी के लिये आ़जिज़ी करता है तो ऐसी आ़जिज़ी वबाले जान भी बन सकती है । शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه झूटी

---

1 . . . طبقاتِ کبریٰ للشعرانی، ص۲۰۱

आ़जिज़ी से बचने की तरग़ीब देते हुए म-दनी इन्आ़म नम्बर 45 में फ़रमाते हैं : आज आप ने आ़जिज़ी के ऐसे अल्फ़ाज़ जिन की ताईद दिल न करे बोल कर निफ़ाक़ और रियाकारी का इर्तिकाब तो नहीं किया ? म-सलन इस त़रह़ कहना कि मैं ह़क़ीर हूं, कमीना हूं वग़ैरा जब कि दिल में खुद को ह़क़ीर न समझता हो ।(1)

औ़रत की बद अख़्लाक़ी पर सब्र

ह़ज़रत सय्यिद अह़मद कबीर रफ़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى का एक मुरीद जो कई मर्तबा ख़्वाब में आप को जन्नत में देख चुका था लेकिन आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से इस का कोई ज़िक्र न किया था, एक दिन ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवा तो आप की बीवी को आप से बद सुलूकी करते पाया और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस ज़ियादती पर ख़ामोश हैं । वोह मुरीद येह देख कर बे क़रार हो गया और दीगर अ़क़ीदत मन्दों के पास जा कर कहने लगा : येह औ़रत ह़ज़रत पर इस क़दर ज़ियादती करती है और तुम ख़ामोश रहते हो ? किसी ने कहा : इस का महर पांच सो दीनार है और ह़ज़रत ग़नी नहीं हैं । वोह आदमी गया और पांच सो दीनार ले कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की

1...... अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस पुर फ़ितन दौर में आसानी से नेकियां करने और गुनाहों से बचने के त़रीक़ए कार पर मुश्तमिल शरीअ़तो त़रीक़त का जामेअ़ मज्मूआ़ बनाम "म-दनी इन्आ़मात" ब सूरते सुवालात मुरत्तब फ़रमाया है । येह दर अस्ल खुद-एह़तिसाबी का एक जामेअ़ और खुदकार निज़ाम है जिस को अपना लेने के बा'द नेक बनने की राह में ह़ाइल रुकावटें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से ब तदरीज दूर हो जाती हैं और इस की ब-र-कत से बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ने पर इस्तिक़ामत पाने, पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनता है ।

ख़िदमत में पेश कर दिये, आप رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ने फ़रमाया : येह क्या है ? अ़र्ज़ की : उस औ़रत का ह़क़्क़े मह्‌र है जो आप के साथ बुरा सुलूक करती है, आप رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ने मुस्कुराते हुए फ़रमाया : अगर मैं उस की बद ज़बानी और बद सुलूकी पर सब्र न करता तो क्या तुम मुझे जन्नत में देख पाते ।(1)

फ़रमाने ग़ौसे आ'ज़म पर गरदन झुका ली

बह्‌जतुल असरार में है कि क़ुत़्बे रब्बानी, शहबाज़े ला मकानी, मुह़्युद्दीन ह़ज़रत सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی ने जिस वक़्त قَدَمِیۡ هٰذِهٖ عَلٰی رَقَبَةِ كُلِّ وَلِیِّ اللهِ (मेरा येह क़दम हर वली की गरदन पर है) फ़रमाया तो ह़ज़रत सय्यिद अह़मद कबीर रफ़ाई عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی ने अपनी गरदन झुका कर अ़र्ज़ की : عَلٰی رَقَبَتِیۡ (मेरी गरदन पर भी आप का क़दम है) ह़ाज़िरीन ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! आप येह क्या फ़रमा रहे हैं ? तो आप ने इर्शाद फ़रमाया : इस वक़्त बग़दाद में ह़ज़रत शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی ने قَدَمِیۡ هٰذِهٖ عَلٰی رَقَبَةِ كُلِّ وَلِیِّ اللهِ का ए'लान फ़रमाया है और मैं ने गरदन झुका कर ता'मीले इर्शाद की है ।(2)

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الرَّحۡمٰن **फ़तावा र-ज़विय्या** जिल्द 28, सफ़ह़ा 388 पर फ़रमाते हैं : (ह़ज़रते ख़िज़्र मौसिली عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं) एक रोज़ में ह़ज़रत सरकारे ग़ौसिय्यत رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنۡه के

1 ... جامع کرامات الاولیاء، ۱/۴۹۴ ملخصاً

2 ... بہجۃ الاسرار، ذکر من حنار اسہ من المشایخ، ص ۳۳ ملخصاً دار الکتب العلمیہ بیروت

हुज़ूर हाज़िर था मेरे दिल में ख़तरा आया कि शैख़ अहमद रफ़ाई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ियारत करूं, हुज़ूर ने फ़रमाया : क्या शैख़ अहमद को देखना चाहते हो ? मैं ने अ़र्ज़ की : हां, हुज़ूर (ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने थोड़ी देर सरे मुबारक झुकाया फिर मुझ से फ़रमाया : ऐ ख़िज़्र ! लो येह हैं शैख़ अहमद। अब जो मैं देखूं तो अपने आप को ह़ज़रत अहमद रफ़ाई के पहलू में पाया और मैं ने उन को देखा कि रो'बदार शख़्स हैं मैं खड़ा हुवा और उन्हें सलाम किया। इस पर ह़ज़रत रफ़ाई ने मुझ से फ़रमाया : ऐ ख़िज़्र ! वोह जो शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर को देखे जो तमाम औलिया के सरदार हैं वोह मेरे देखने की तमन्ना (क्यूं करता है ?) मैं तो इन्हीं की रइय्यत (या'नी मा तह़्तों) में से हूं, येह फ़रमा कर मेरी नज़र से ग़ाइब हो गए फिर हुज़ूर सरकारे ग़ौसिय्यत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के विसाले अक़्दस के बा'द बग़दाद शरीफ़ से ह़ज़रत सय्यिद अहमद रफ़ाई की ज़ियारत को उम्मे अ़बीदा गया उन्हें देखा तो वोही शैख़ थे जिन को मैं ने उस दिन ह़ज़रत शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पहलू में देखा था। इस वक़्त के देखने ने कोई और ज़ियादा उन की शनाख़्त मुझे न दी। ह़ज़रत रफ़ाई ने फ़रमाया : ऐ ख़िज़्र ! क्या पहली (ज़ियारत) तुम्हें काफ़ी न थी।

इमाम रफ़ाई और औलियाए उम्मत

इमाम रफ़ाई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की अ़ज़मतो रिफ़्अ़त और क़द्रो मन्ज़िलत के बयान में बहुत से जलीलुल क़द्र औलिया और बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَھُمُ اللّٰہُ الْمُبِین के मल्फ़ूज़ात मिलते हैं आइये उन में से तीन हस्तियों के मल्फ़ूज़ात मुला-ह़ज़ा कीजिये :

1. किसी ने हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बारगाह में इमाम रफ़ाई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के मु-तअ़ल्लिक़ पूछा तो इर्शाद फ़रमाया : उन का अख़्लाक़ सर ता पा शरीअ़त और क़ुरआनो सुन्नत के ऐ़न मुत़ाबिक़ है और उन का दिल **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त के साथ मश्ग़ूल है। उन्हों ने सब कुछ छोड़ कर सब कुछ पा लिया (या'नी रिज़ाए इलाही की ख़ात़िर काएनात को छोड़ा तो रब को पा लिया और जब रब मिल गया तो सब कुछ मिल गया)।[1]

2. वलिय्ये कबीर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम हवाज़िनी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : मैं सय्यिद अह़मद कबीर की क्या ता'रीफ़ कर सकता हूं। उन के जिस्म का हर बाल एक आंख बन चुका है जिस के ज़रीए़ वोह दाएं बाएं, मशरिक़ व मग़रिब हर सम्त में देखते हैं।[2]

3. आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : आप का शुमार अक़्त़ाबे अर्बआ़ से है या'नी उन चहार में जो तमाम अक़्त़ाब में आ'ला व मुमताज़ गिने जाते हैं। अव्वल हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदुना ग़ौसुल आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ, दुवुम सय्यिद अह़मद रफ़ाई, सिवुम ह़ज़रत सय्यिद अह़मद कबीर बदवी, चहारुम ह़ज़रत सय्यिद इब्राहीम दुसूक़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم।[3]

1...... सीरते सुल्त़ानुल औलिया, स. 200 मुलख़्ख़सन
2...... सीरते सुल्त़ानुल औलिया, स. 200 मुलख़्ख़सन
3...... फ़तावा र-ज़विय्या, 21/550 बि तग़य्युरिन

शाख़े तमन्ना हरी हो गई

हज़रत सय्यिद अहमद कबीर रफ़ाई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى को रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में भी ख़ास मक़ाम हासिल था। चुनान्चे आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه हज से फ़रागत के बा'द जब हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर पर मुवा-जहा शरीफ़ के सामने हाज़िर हुए तो येह दो शे'र पढ़े :

فِىْ حَالَةِ الْبُعْدِ رُوْحِىْ كُنْتُ اُرْسِلُهَا تُقَبِّلُ الْاَرْضَ عَنِّىْ فَهِىَ نَائِبَتِىْ

तरजमा : मैं दूरी की हालत में अपनी रूह को बारगाहे अक्दस में भेजा करता था जो मेरी नाइब बन कर इस अर्ज़े मुक़द्दस को चूमा करती थी।

وَ هٰذِهٖ نَوْبَةُ الْاَشْبَاحِ قَدْ ظَهَرَتْ فَامْدُدْ يَمِيْنَكَ كَىْ تَحْظٰى بِهَا شَفَتِىْ

तरजमा : अब ज़ाहिरी जिस्म की बारी है जो हाज़िरे ख़िदमत है लिहाज़ा अपना दस्ते अक्दस बढ़ाइये ताकि मेरे होंट दस्त बोसी से शरफ़ याब हो सकें।

चुनान्चे रौज़ए अन्वर से दायां दस्ते अक्दस ज़ाहिर हुवा और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़र्ते अक़ीदत से उसे चूम लिया, इस मन्ज़र को वहां मौजूद लोगों ने भी देखा।(1)

इस वाक़िए का ज़िक्र इमामे अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن ने **फ़तावा र-ज़विय्या** जिल्द 22, सफ़हा 374 में भी फ़रमाया है।

---

1 ... جامع كرامات الاولياء، ١/٤٩٤

सुनहरी जालियां हों, आप हों और मुझ सा आ़सी हो
वहीं येह जां जुदा हो जाने जानां या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश, स. 292)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह एक ह़क़ीक़त है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने फ़ज़्लो करम से अपने बर गुज़ीदा बन्दों को बहुत से कमालात और मा फ़ौकुल फ़ित़रत तसर्रुफ़ात अ़त़ा फ़रमाता है। ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद कबीर रफ़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی भी उन्ही बन्दगाने ख़ुदा में से एक कसीरुल करामात बुज़ुर्ग हैं आप की ज़ात से वक़्तन फ़ वक़्तन ऐसे ऐसे कमालात ज़ाहिर होते रहे जिन्हें पढ़ने और सुनने से अ़क़्ल दंग रह जाती है और ज़बाने शौक़ से बे इख़्तियार سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ की सदाएं बुलन्द होती हैं। आइये हम भी हुसूले ब-र-कत के लिये आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की चन्द करामात सुनते हैं।

﴾1﴿ दुन्या में जन्नती मह़ल की ज़मानत

एक मर्तबा ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद कबीर रफ़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی अपने मुरीदे ख़ास ह़ज़रते सय्यिदुना जमालुद्दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن की ख़्वाहिश पर उन के लिये एक बाग़ की ख़रीदारी के लिये गए तो बाग़ के मालिक शैख़ इस्माईल ने कहा कि अगर इस बाग़ के बदले मुझे मेरी मुंह मांगी चीज़ न मिली तो मैं हरगिज़ न बेचूंगा, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : ऐ इस्माईल ! मुझे

बताओ इस की क्या क़ीमत चाहते हो ? उस ने कहा : या सय्यिदी ! मैं जन्नती महल के बदले ही येह बाग़ आप को दे सकता हूं, आप ने फ़रमाया : मैं भला कौन होता हूं जो मुझ से जन्नती महल मांग रहे हो, मुझ से दुन्या की जो चीज़ चाहो मांग लो, उस ने कहा : मुझे दुन्या की कोई चीज़ नहीं चाहिये । आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने अपना सर झुकाया चेहरे की रंगत तब्दील हो कर पीली पड़ गई थोड़ी देर बा'द सर उठाया तो पीलाहट सुर्ख़ी में तब्दील हो गई । फिर फ़रमाया : इस्माईल ! जो तुम ने मांगा था मैं ने उस के बदले येह बाग़ ख़रीद लिया है । उस ने अ़र्ज़ की : या सय्यिदी ! येह बात मुझे लिख कर अ़ता फ़रमा दें, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने एक काग़ज़ पर بِسْمِ الله शरीफ़ लिखने के बा'द येह इबारत तह़रीर फ़रमा दी :

येह वोह महल है जिसे इस्माईल बिन अ़ब्दुल मुन्इम ने फ़क़ीर ह़क़ीर बन्दे अहमद बिन अबू ह़सन रफ़ाई से ख़रीदा है जिस के ज़ामिन ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم हैं, इस का ह़ुदूदे अर्बअ़ा येह है कि एक त़रफ़ जन्नते अ़द्न है तो दूसरी त़रफ़ जन्नते मावा है, तीसरी जानिब जन्नते ख़ुल्द और चौथी जानिब जन्नते फ़िरदौस है, वहां की सब हूरें व ग़िल्मान, क़ालीन, साज़ो सामान, नहरें और सब दरख़्त इस सौदे में शामिल हैं येह महल इस्माईल के दुन्यावी बाग़ के बदले में है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस बात का शाहिद व कफ़ील है ।

फिर आप ने वोह काग़ज़ तह कर के शैख़ इस्माईल के ह़वाले कर दिया । वोह तह़रीर ले कर अपने बच्चों के पास आए और फ़रमाया : मैं येह बाग़ सय्यिदी अहमद को बेच चुका हूं, बच्चों ने

कहा : आप ने क्यूं बेच दिया ह़ालां कि हमें तो इस की ज़रूरत थी ? तो उन्हों ने जन्नती मह़ल मिलने का वाक़िआ़ सुनाया : बच्चों ने कहा : हम उस वक़्त राज़ी होंगे जब उस मह़ल में हमारी भी शिर्कत हो, फ़रमाया : वोह हम सब का बाग़ है। इस के बा'द वोह बाग़ ह़ज़रते सय्यिदुना जमालुद्दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِيْن के ह़वाले कर दिया। कुछ मुद्दत के बा'द शैख़ इस्माईल का इन्तिक़ाल हो गया। चूंकि उन्हों ने ज़िन्दगी ही में अपने बेटों को येह वसिय्यत कर रखी थी कि येह तह़रीर मेरे कफ़न में रख देना। लिहाज़ा अगले दिन सुब्ह़ उन की क़ब्र पर लिखा हुवा पाया "قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا" (हमें तो मिल गया जो सच्चा वा'दा हम से हमारे रब ने किया था) ।(1)

﴾2﴿ बहरे भी कलाम सुन लेते

ह़ज़रत सय्यिद अह़मद कबीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِيْر की आ़दते मुबा-रका थी कि बैठ कर बयान फ़रमाया करते, आप की आवाज़ दूर वाले भी इसी त़रह़ ब आसानी सुन लेते थे जिस त़रह़ क़रीब वाले सुनते, ह़त्ता कि आस पास की बस्ती वाले अपनी छतों पर बैठ कर आप का बयान सुनते और उन्हें एक एक लफ़्ज़ साफ़ सुनाई देता था, जब बहरे आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर होते तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप की गुफ़्त-गू सुनने के लिये उन के कान खोल देता और मशाइख़े त़रीक़त ह़ाज़िर होते तो दौराने बयान अपने दामन फैलाए रखते जब इमाम रफ़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى बयान से फ़ारिग़ होते तो येह

1 . . . جامع کرامات الاولیاء، ۱/۴۹۲ ملخصاً

हज़रात अपना दामन सीने से लगा लेते और वापस आ कर अपने मुरीदों के सामने हर बात बयान कर देते ।[1]

﴾3﴿ ता'वीज़ पहले ही लिखा हुवा है

जब कोई आप رَحْمَۃُ اللہِ تعالٰی عَلَیْہ से ता'वीज़ लेने आता और आप के पास सियाही न होती तो आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ दरख़्त का पत्ता लेते और बिग़ैर सियाही (उंगली से) लिख देते । एक मर्तबा एक शख़्स को सियाही के बिग़ैर ता'वीज़ लिख कर दिया, उस ने पत्ता लिया और अ़र्सए दराज़ के बा'द आप की ख़िदमत में वोही पत्ता ले कर ह़ाज़िर हुवा और बत़ौरे इम्तिह़ान आप की ख़िदमत में ता'वीज़ लिखने के लिये पेश किया, जब आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने पत्ता देखा तो उसे झिड़क्ने के बजाए निहायत नरमी के साथ इर्शाद फ़रमाया : बेटा ! येह तो पहले ही लिखा हुवा है और फिर वोह पत्ता उसे वापस कर दिया ।[2]

﴾4﴿ पथ्थर रोटी बन गए

हज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद कबीर रफ़ाई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی के भान्जे हज़रते सय्यिदुना अबुल फ़रज अ़ब्दुर्रह़मान रफ़ाई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : एक मर्तबा मैं ऐसी जगह छुप कर बैठा था कि जहां से इमाम रफ़ाई رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को देख कर उन की बातें सुन सकता था कि यकायक फ़ज़ा से एक आदमी ज़मीन पर उतरा

1 ...طبقاتِ کبریٰ للشعرانی، ص۱۹۹

2 ...جامع کرامات الاولیاء ۱/ ۲۹۳

और आप के सामने आ कर बैठ गया, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : मशरिक़ से आने वाले को ख़ुश आमदीद, उस ने अ़र्ज़ की : बीस दिन से मैं ने न कुछ खाया है न पिया है मैं चाहता हूं आप मुझे मेरी पसन्द का खाना खिलाएं, आप ने फ़रमाया : तुम्हारी ख़्वाहिश क्या है ? उस ने नज़र उठाई तो पांच मुर्ग़ाबियां फ़ज़ा में उड़ रही थीं उस ने कहा : मुझे इन में से एक भुनी हुई मुर्ग़ाबी, गन्दुम की दो रोटियां और ठन्डे पानी का एक जग चाहिये, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उन मुर्ग़ाबियों को देखा और फ़रमाया : फ़ौरन इस आदमी की ख़्वाहिश पूरी कर दो ! अभी बात मुकम्मल भी न हुई थी कि उन में से एक भुनी हुई मुर्ग़ाबी आप की ख़िदमत में हाज़िर हो गई, फिर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपने पहलू में पड़े हुए दो पथ्थरों को उठा कर जूंही उस के सामने रखा हैरत अंगेज़ तौर पर फ़ौरन वोह पथ्थर छने हुए आटे की दो उ़म्दा रोटियां बन गए, फिर फ़ज़ा में हाथ बुलन्द किया तो सुर्ख़ रंग का पानी से भरा हुवा जग नुमूदार हो गया इस के बा'द उस दरवेश आदमी ने खाना खाया और फिर जिस त़रह आया था उसी त़रह फ़ज़ा में उड़ता हुवा वापस चला गया, उस के जाने के बा'द आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने मुर्ग़ाबी की तमाम हड्डियों को बाएं हाथ में लिया और उन पर अपना दायां हाथ फैरते हुए फ़रमाया : ऐ बिखरी हुई हड्डियो ! ऐ टूटे हुए जोड़ो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم की ब-र-कत से उड़ जाओ, चुनान्चे देखते ही देखते वोह हड्डियां ज़िन्दा मुर्ग़ाबी में तब्दील हो गईं और वोह मुर्ग़ाबी फ़ज़ा में उड़ती हुई निगाहों से ओझल हो गई ।(1)

---

1 . . . جامع كرامات الاولياء، ١/٢٩٤ ملخصاً

«5» जहन्नम से आज़ादी का परवाना

एक मर्तबा ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम रफ़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى के दो मुरीद इ़बादतो रियाज़त के लिये सह़रा में मौजूद थे। उन में से एक ने तमन्ना की, कि काश ! हम पर जहन्नम से आज़ादी का परवाना नाज़िल हो जाए, इतने में आस्मान से एक सफ़ेद काग़ज़ गिरा, उन्हों ने उसे उठा कर देखा तो ब ज़ाहिर कोई इ़बारत तह़रीर न थी, वोह दोनों उस काग़ज़ को पीरो मुर्शिद के पास ले गए मगर वाक़िए़ का पस मन्ज़र न बताया, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस काग़ज़ को देखा तो सज्दे में गिर गए, फिर सर उठा कर फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है कि उस ने मेरे मुरीदों की जहन्नम से आज़ादी का परवाना दुन्या ही में मुझे दिखा दिया, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से अ़र्ज़ की गई : हु़ज़ूर ! येह तो कोरा काग़ज़ है, फ़रमाया : दस्ते क़ुदरत सियाही वग़ैरा का मोह़ताज नहीं येह काग़ज़ नूर से लिखा हुवा है।[1]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب !   صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आप के मल्फ़ूज़ात

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद कबीर रफ़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى अपने मुरीदीन व मुह़िब्बीन की ह़ुस्ने तरबियत के लिये वक़्तन फ़ वक़्तन शरीअ़त व त़रीक़त के बेहतरीन रहनुमा उसूल भी बयान करते रहे। आइये ! इन के चन्द मल्फ़ूज़ात मुला-ह़ज़ा कीजिये :

---

1 ... جامع کرامات الاولیاء، ۱/ ۴۹۳

1. जो अपने ऊपर ग़ैर ज़रूरी बातों को लाज़िम करता है वोह ज़रूरी बातों को भी ज़ाएअ़ कर देता है ।
2. मख़्लूक़ को अपने तराज़ू में मत तोलो बल्कि अपने आप को मोमिनीन के तराज़ू में तोलो ताकि तुम उन की फ़ज़ीलत और अपनी मोह़ताजी जान सको ।
3. जो शख़्स येह ख़याल करे कि उस के आ'माल उसे रब्बे क़दीर عَزَّوَجَلَّ तक पहुंचा देंगे तो उस ने अपना रास्ता खो दिया । (अपने आ'माल के बजाए रह़मते इलाही पर नज़र करे ।)
4. **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से वोही उन्सिय्यत रख सकता है जो कामिल द-रजे की त़हारत रखता हो ।
5. **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ग़ौस व क़ुत़ब को ग़ैबों पर मुत़्त़लअ़ फ़रमा देता है पस जो भी दरख़्त उगता है और पत्ता सर-सब्ज़ होता है तो वोह सब जान लेते हैं ।
6. जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर तवक्कुल करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के दिल में ह़िक्मत दाख़िल फ़रमाता है और हर मुश्किल घड़ी में उसे काफ़ी हो जाता है ।
7. कितने ही ख़ुश होने वाले ऐसे हैं कि उन की ख़ुशी उन के लिये मुसीबत बन जाती है और कितने ही ग़मगीन ऐसे हैं कि उन का ग़म उन के लिये बाइ़से नजात बन जाता है ।
8. अफ़्सोस है ऐसे शख़्स पर जो दुन्या मिल जाने पर उस में मश्ग़ूल हो जाता है और छिन जाने पर ह़सरत करता है ।

9. **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत की अ़लामत येह है कि **औलियाउल्लाह** के इलावा तमाम मख़्लूक़ से वह़्शत हो क्यूं कि औलिया से मह़ब्बत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत है।

10. हमारा त़रीक़ा तीन चीज़ों पर मुश्तमिल है : न तो किसी से मांगो, न किसी साइल को मन्अ़ करो और न ही कुछ जम्अ़ करो।

11. मुरीद के लिये सब से ज़ियादा नुक़्सान देह बात येह है कि वोह अपने नफ़्स के लिये रुख़्सत और तावीलात क़बूल करने में चश्म पोशी से काम ले।(1)

मश्हूर ख़ु-लफ़ा व तलामिज़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद कबीर रफ़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इस क़दर मक़्बूल थे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी मख़्लूक़ के दिल इन की त़रफ़ फैर दिये थे जहां जहां मुसल्मान आबाद थे वहां आप के मुत्तबिईन व मुरीदीन पाए जाते थे अ़क़ीदत मन्दों की कसरत का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि आप की ह़यात में सिर्फ़ आप के ख़ु-लफ़ा और ख़ु-लफ़ा के ख़ु-लफ़ा की ता'दाद ही एक लाख अस्सी हज़ार तक पहुंच चुकी थी।(2) इन में शैख़ उ़मर फ़ारूसी, शैख़ अबू शुजाअ़ फ़क़ीह शाफ़ेई, शैख़ यूसुफ़ ह़ुसैनी समर क़न्दी, आ़रिफ़ बिल्लाह अ़ब्दुल मलिक बिन ह़म्माद मौसिली, क़ुत़्बे कबीर अबू अ़ब्दुर्रह़ीम

---

1 ...طبقات الصوفية للمناوى، ٢/٢٢١ تا ٢٢٧ ملتقطاً

2...... सीरते सुल्त़ानुल औलिया, स. 77 बि तग़य्युरिन क़लील

बिन मुह़म्मद बिन ह़सन बराई वग़ैरा رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی आप के मश्हूर खु-लफ़ा व तलामिज़ा में शामिल हैं।[1]

आप के सज्जादा नशीन

ह़ज़रत इमामे कबीर मुह़्युद्दीन, सय्यिद अबू इस्ह़ाक़ इब्राहीम आ'ज़ब रफ़ाई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی सिल्सिलए रफ़ाइय्या के सज्जादा नशीन बनाए गए। हिन्द में सब से पहले आप का फ़ैज़ान आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के ख़लीफ़ा ह़ज़रत शैख़ **अ़ब्दुल्लाह** अन्सारी बदायूनी रफ़ाई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی अल मा'रूफ़ झन्डे वाले पीर ने तक़्सीम फ़रमाया जिन का मज़ार अन्दरूने शहर बदायूं (यूपी) हिन्द में है।[2]

आप की तसानीफ़

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने मु-तअ़द्दिद किताबें तह़रीर फ़रमाईं लेकिन अक्सर कुतुब तातारियों के ह़म्ले में ज़ाएअ़ हो गईं अलबत्ता जो किताबें ज़ेवरे त़बाअ़त से आरास्ता हुईं उन में से चन्द के नाम येह हैं :

(1) حَالَةُ اَهْلِ الْحَقِيْقَةِ مَعَ اللّٰهِ (2) رَاتِبُ الرَّفَاعِی
(3) اَلسِّرُّ الْمَصُوْن (4) اَلْبُرْهَانُ الْمُؤَيَّد[3]

आप की औलाद

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को एक बेटे और दो

1...... सीरते सुल्त़ानुल औलिया, स. 79, 80 मुल-त-क़त़न
2...... तारीख़े मशाइख़े क़ादिरिय्या, स. 44, वग़ैरा
3...... सीरते सुल्त़ानुल औलिया, स. 81 मुल-त-क़त़न

बेटियों से नवाज़ा था बेटे का इन्तिक़ाल तो सत्तरह साल की उ़म्र में ही हो गया था लिहाज़ा साहिब ज़ादियों से आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का सिल्सिलए नस्ल चला जिन की औलाद में बड़े बड़े आ़लिम, फ़ाज़िल और बा कमाल बुज़ुर्ग हुए ।(1)

ज़िन्दगी के आख़िरी अय्याम

आप के ख़ादिमे ख़ास ह़ज़रते या'क़ूब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : विसाल से पहले सय्यिदी अह़मद कबीर रफ़ाई عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی म-रज़े इस्हाल (पेट की बीमारी) में मुब्तला हुए, एक माह तक इसी तक्लीफ़ में मुब्तला रहे और बीस दिन तक न कुछ खाया न पिया । नीज़ ज़िन्दगी के आख़िरी लम्ह़ात में आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه पर निहायत रिक़्क़त त़ारी थी अपना चेहरा और दाढ़ी मुबारक मिट्टी पर रगड़ते और रोते रहते, लबों पर येह दुआ़एं जारी थीं "**या अल्लाह** अ़फ़्वो दर गुज़र फ़रमा, **या अल्लाह** मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दे, **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे इस मख़्लूक़ पर आने वाली मुसीबतों के लिये छत बना दे ।"(2)

बिल आख़िर 66 साल इस दारे फ़ानी में रह कर मख़्लूक़े ख़ुदा की रुश्दो हिदायत का काम सर अन्जाम देने के बा'द बरोज़ जुम्अ़रात 22 जुमादल ऊला 578 सि.हि. ब मुत़ाबिक़ 13 सितम्बर 1182 सि.हि. ब वक़्ते ज़ोह्र आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इस आ़लमे फ़ना से आ़लमे बक़ा का सफ़र इख़्तियार किया, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की

1...... सीरते सुल्त़ानुल औलिया, स. 82 मुलख़्ख़सन

2...طبقاتِ کبریٰ للشعرانی، ص ۲۰۲ بتغیر

ज़बाने मुबारक से अदा होने वाले आख़िरी कलिमात येह थे :

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

थोड़ी ही देर में बस्ती उम्मे अ़बीदा के गिर्दो नवाह़ में आप के विसाले पुर मलाल की ख़बर मश्हूर हो गई, बस फिर क्या था ! आप के आख़िरी दीदार और नमाज़े जनाज़ा में शिर्कत के लिये लोग दूर दूर से जम्अ़ होने लगे यहां तक कि नमाज़े जनाज़ा के वक़्त कई लाख का मज्मअ़ मौजूद था, बा'द नमाज़े जनाज़ा ख़ानक़ाहे उम्मे अ़बीदा ही में आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की तद्फ़ीन की गई। आज आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के विसाले मुबारक को सदियां हो चुकीं मगर इस के बा वुजूद जुनूबी इराक़ में आप का मज़ारे मुबारक बे शुमार अ़क़ीदत मन्दों की उम्मीदों का मर्कज़ बना हुवा है।(1)

बा'दे विसाल ह़ाजत रवाई

ह़ज़रते शैख़ उ़मर फ़ारूसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मुझे कई मर्तबा इमाम रफ़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی के मज़ारे अक़्दस पर ह़ाज़िरी की सआ़दत नसीब हुई, एक मर्तबा तो ऐसा भी हुवा कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने क़ब्रे मुबारक से ब आवाज़े बुलन्द मेरी एक ह़ाजत के बारे में फ़रमाया : जा ! तेरी ह़ाजत पूरी कर दी गई।(2)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب !　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 ...طبقاتِ کبریٰ للشعرانی، ص۲۰۲ ملتقطاً، وغیرہ

2 ...جامع کرامات الاولیاء، ۱/۴۹۱

फ़ेहरिस

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात मग़रिब की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है । आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि ''**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है । اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ**'' अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करना है । اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ






ISBN
0133116



मक-त-बतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

- अह़मदआबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बगीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
- देहली :- मक-त-बतुल मदीना, उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली - 6, फ़ोन : 011-23284560
- मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा स्ट्रीट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
- हैदरआबाद :- मक-त-बतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदरआबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 24572786